शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 3, pp (147-155), Month: Sep. 2018

राजनैतिक दल एवं युवा संगठन : मुद्दे एवं पारस्परिक सम्बन्ध

शालिनी यादव,
शोध–छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, भारत
Email : yadavshalini2011@gmail.com

सारांश

समकालीन समाज में युवा एवं राजनैतिक दलों का प्रभावपूर्ण स्थान है। अपने हितों के लिये यह दोनों एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं। युवाओं की राजनीतिक अभिरूचि एवं सहभागिता इसलिए बढ़ रही है क्योंकि आज युवा अपने करियर, प्रसिद्धि, शक्ति, सत्ता, धन प्राप्ति एवं राष्ट्र–निर्माण हेतु निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित करना चाहता है। राजनैतिक दल भी युवाओं को वोट की राजनीति हेतु विभिन्न युवा केन्द्रित संगठनों द्वारा परियोजित करते है। प्रस्तुत शोध चयनित युवा संगठनों के मुद्दों एवं राजनैतिक दलों के साथ इनके सम्बन्धों की प्रकृति पर प्रकाश डालने का प्रयास करता है। यह विश्लेषण राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय युवा संगठनों का एक तुलनात्मक अध्ययन है, जो द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से संग्रहित आकड़ों पर आधारित है। इस अध्ययन के आधार पर स्पष्ट कहा जा सकता है, कि युवा संगठन अपनी गतिविधियों से समाज के संदर्भ में शक्तिशाली व्यक्तित्व के रूप में उभरना चाहते हैं।

मुख्य शब्द– *राजनैतिक दल, युवा राजनैतिक संगठन, राजनैतिक उन्मुखता।*

प्रस्तावना

युवाओं का राजनैतिक दलों से संबंध बहुत पुराना है, यद्यपि भारत में राजनैतिक दलों का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1885 में एक सामाजिक संगठन के रूप में स्थापना हुइ थी। यह संगठन एक राजनैतिक दल के रूप में विकसित हुआ, जिसे भारत का प्रथम राजनैतिक दल माना जा सकता है। भारत में राष्ट्रवाद के विकास एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उस योगदान के महत्व का आंकलन इसी बात से किया जा सकता है, कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का पर्याय समझा गया। हालांकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उसके प्रारम्भ से ही ऐसे अनेक सदस्य व नेता थे, जिनको आयु की दृष्टि से युवा कहा जा सकता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अनेक कार्यक्रमों, आन्दोलनों एंव जन संघर्षों में भी युवाओं की भागीदारी बड़ी मात्रा में थी (देसाई, 1948; चन्द्रा,1988)।

वस्तुतः किसी भी जन संघर्ष एवं आन्दोलन में युवा कार्यकर्ताओं और समर्थकों का एक

महत्वपूर्ण स्थान होता ही है, संभवतः आन्दोलन में संघर्ष के लिये एक क्षमता एवं ऊर्जा की आवश्यकता होती है। जोकि सामान्यतः युवाओं अथवा युवकों में पाई जाती है। लेकिन यह भी दृष्टव्यहै कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एक दल के रूप में उदय काफी समय पश्चात हुआ। युवाओं के एक विशेष संगठन के रूप में नेशनल स्टूडेन्ट्स यूनियन ऑफ इंडिया (NSUI) विकसित हुआ, जिसकी स्थापना 9 अप्रैल, 1971 में हुई।

भारत के दूसरे राजनैतिक दल भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.) की स्थापना 26 दिसम्बर, 1925 को कुछ प्रबल युवा देशभक्तों द्वारा देश को उपनिवेशवाद के बन्धनों से मुक्त करने के लिये की गई थी। सी.पी.आई. की स्थापना राष्ट्रीय स्वतन्त्रता एवं समाजवाद के भविष्य के लिये की गई थी(CPI; 2016)। इसके युवा संगठन की स्थापना मुख्य संगठन की स्थापना के 11 साल बाद 1936 में हुई, जो प्रारम्भ में अत्यधिक सक्रिय नही था। संभवतः इसका कारण यह हो सकता है कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता युवा ही थे। इसी प्रकार युवाओं के संगठन हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी जोकि चन्द्रशेखर आजाद की एवं भगतसिंह की पार्टी के नाम से जानी जाती रही है, एवं ऑल इंडिया फॉर्वर्ड ब्लाक जिसकी स्थापना 1939 में सुभाष चन्द्र बोस द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अन्दर एक गुट के रूप में की गई थी, मूलतः युवाओं का ही एक संगठन था। इस दल के नेता विशेष रूप से युवाओं को सम्बोधित करते थे व अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये उनका आह्वान भी करते थे।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि स्वतन्त्रता से पूर्व स्वतन्त्रता के लिये संघर्षरत दलों एवं आन्दोलनों मे युवाओं का स्थान एवं महत्व दोनों ही सशक्त रूप में मौजूद रहे। स्वतन्त्रता के पश्चात् एक युवा देश में युवा केन्द्रित राजनीति का बड़ी तेजी से प्रादर्भाव एवं विकास हुआ। इस युवा राजनीति की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति विभिन्न राजनैतिक दलों के युवा संगठन है, जो दिन प्रतिदिन उनकी राजनीति में विशेष रूप से चुनाव में अपने–अपने दलों के लिये महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित करते है, यह युवा राजनीति को कभी–कभी एक नया रूप भी प्रदान करते है (Sampat and Mishra, 2014)। इस प्रकार देखा जाये तो स्वतंत्रता से पूर्व युवाओं का राजनैतिक दलों के साथ सहयोगी सम्बन्ध था एवं दोनों की भूमिका लगभग बराबर थी, लेकिन स्वतंत्रता के बाद राजनैतिक दलों के लिये युवा संगठन एक प्रकार का दबाव समूह है (वीनर; 1963)।

युवाओं की राजनैतिक सहभागिता : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

युवाओं की राजनैतिक सहभागिता के ऐतिहासिक उदय एवं विकास को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में देखा जा सकता है। आरम्भ में युवाओं के कई छुट–पुट संगठन बने, जोकि प्रत्यक्ष रूप से पूर्णतः राजनैतिक दलों से संबंधित नहीं थे, न ही वे राजनैतिक दलों द्वारा परियोजित थे, न ही उनके मुद्दे राजनीति से संबंधित थे। परन्तु वे भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करने वालों द्वारा संचालित संगठनों से अवश्य जुड़े थे, जोकि युवाओं में आंशिक रूप से राजनैतिक सक्रियता कही जा सकती है। 'कलकत्ता स्टूडेन्ट्स एसोसिऐशन' की स्थापना 1875 में ए0एम0 बोस द्वारा की गयी, जिसमें सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने युवा आन्दोलन के उदय के लिये अपील की थी। युवा आरम्भ से ही राष्ट्रीय आन्दोलन में विस्तृत एवं सक्रिय रूप से

सहभागिता करते आये हैं। 1905 का स्वदेशी आन्दोलन इसका प्रतीक रहा है, जब छात्रों ने लार्ड कर्जन के बंगाल का विभाजन निर्णय का विरोध किया था (चन्द्रा; 1988, सरस्वती; 1988)।

इस प्रकार अन्य कई युवा सभाओं एवं संगठनों का उदय हुआ, जो धीरे–धीरे राजनैतिक क्रियाओं से जुड़ने लगे, जैसे 'बम्बई यूथ लीग'। इस काल में कई संगोष्ठियों का भी प्रारम्भ हुआ, जो भारतीय राजनेताओं द्वारा संचालित थी, तथा युवाओं की उन्मुखता से जुड़ी थी। उदाहरणार्थ 1920 में पहली 'ऑल इंडिया कॉलेज स्टूडेन्ट्स कान्फ्रेन्स' नागपुर में आयोजित हुई, जिसमें छात्रों को विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से बायकॉट करने को कहा गया। छात्रों द्वारा किया गया यह बायकॉट, असहयोग आन्दोलन का हिस्सा बना और यहीं से प्रत्यक्ष तौर से छात्रों की राजनैतिक सहभागिता प्रारम्भ हुई। यह असहयोग आन्दोलन महात्मा गाँधी द्वारा संचालित था, साथ ही ऑल इण्डिया कॉलेज स्टूडेन्ट्स कान्फ्रेन्स को काँग्रेस नेताओं का सहयोग प्राप्त था जैसे कि नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस और लाला लाजपत राय(सरस्वती; 1988,पाण्डे; 1994)।

राजेन्द्र पाण्डे (1994) के मत में युवा, ब्रिटिश सरकार व भारतीय जनता के मध्य मध्यस्थ की भाँति थे, जिन्होंने अपने शैक्षिक कार्य के दौरान ब्रिटिशर्स की भाषा, संस्कृति इत्यादि सीखकर महात्मा गाँधी एवं अन्य राजनेताओं द्वारा संचालित भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रमुख शक्ति के रूप में सामने आये। इसी प्रकार दूसरा, तीसरा व चौथा ऑल इंडिया स्टूटेन्ट्स कान्फ्रेंस क्रमशः अहमदाबाद (1921), गया (1922) एवं मद्रास में आयोजित हुये। इन सभी संगोष्ठियों का मुख्य मुद्दा छात्रों द्वारा अंग्रेजों के बनाये विद्यालयों तथा वस्तुओं का बहिष्कार करना तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में युवा सहभागिता को बढ़ाना था। आगे चलकर 1920 के बाद युवाओं को विभिन्न राजनेताओं द्वारा भिन्न–भिन्न विचारधाराओं से परियोजित किया गया। सुभाषचन्द्र बोस ने 1928 में 'ऑल इंडिया यूथ लीग' की स्थापना की।यह ऑल इंडिया फॉर्वर्ड ब्लाक का युवा संगठन है, जो समाजवाद, प्रजातन्त्र व भगत सिंह के क्रांतिकारी विचारों से प्रभावित था। इस युवा संगठन का उद्देश्य भारतीय युवाओं में क्रान्तिकारी उत्साह को विकसित एवं सुदृढ़ करना था। काँग्रेसी नेता जवाहरलाल नेहरू द्वारा 1928 में 'ऑल बंगाल स्टूडेन्ट्स कांफ्रेन्स' कलकत्ता में आयोजित की गयी, इसी कांफ्रेन्स में 'ऑल बंगाल स्टूडेन्ट्स एसोसिऐशन' अस्तित्व में आया। इसी तरह 'बम्बई प्रेसीडेन्सी स्टूडेन्ट्स फेडरेशन' बना (सरस्वती; 1988,पाण्डे; 1994,AIYL; 2016)।

जहाँ एक तरफ युवाओं के संगठन अस्तित्व में आ रहे थे, वही दूसरी ओर क्षेत्रीय, व वैचारिक आधार पर विभाजित भी हो रहे थे। बाद में हिन्दुत्ववादी विचाराधारा से संचालित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जो कि 27 सितम्बर 1925 को स्थापित हुआ था (BJP; 2016) के छात्र संगठन 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद' की स्थापना हुई। दूसरी ओर मुस्लिम छात्रों द्वारा 'ऑल इण्डिया मुस्लिम स्टूडेन्ट्स फेडरेशन'(1937) बना। अब तक क्षेत्रीय व वैचारिक ही नहीं बल्कि सामुदायिक आधार पर भी युवा विभाजित होने लगे थे। अतः यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता पूर्व युवाओं में जहाँ एक ओर राष्ट्रीय भावना का उदय हो रहा था, वहीं दूसरी ओर उनमें वैचारिक मतभेद स्पष्ट हो रहा था।

विभिन्न राजनैतिक दल जोकि भिन्न–भिन्न विचारधाराओं से संचालित थे, जैसे कांग्रेस, समाजवादी, साम्यवादी, हिन्दुत्ववादी इत्यादि ने छात्र आन्दोलनों का निर्देशन किया व साथ ही लगभग सभी राजनैतिक दलों ने युवा संगठनों का प्रयोग अपने दल का प्रभुत्व स्थापित करने में किया। धीरे–धीरे कई युवा एवं छात्र संगठन अस्तित्व में आये, जो किसी न किसी राजनैतिक दल से जुड़े थे। जैसे ऑल इंडिया यूथ फैडरेशन की स्थापना 3 मई 1959 को दिल्ली में आयोजित सम्मेलन में हुई थी। यह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का युवा संगठन है, जो वर्ल्ड फैडरेशन ऑफ डेमोक्रेटिक युथ (WFDY) का सदस्य होने के साथ साम्यवादी विचारधारा से अग्रसित है (AIYF; 2016)A

'इंडियन यूथ कॉंग्रेस' की स्थापना 1960 में हुई जोकि भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस का युवा संगठन है। भारतीय युवा कांग्रेस, कांग्रेस पार्टी की विचारधारा की भांति सामाजिक न्याय, सामाजिक प्रजातंत्र, धर्मनिरपेक्षता एवं स्वतंत्र राष्ट्रवाद की विचारधारा पर आधारित है (IYC;2016) ।' भारतीय जनता युवा मोर्चा' 1978 में भाजपा द्वारा स्थापित हुआ, जो बीजेपी की सभी मूलभूत विचारधाराओं में विश्वास करता है। सम्पूर्ण मानवतावाद की अवधारणा इसकी विचारधारा में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, साथ ही पार्टी का उद्देश्य भारत को आधुनिक, प्रगतिशील और प्रबुद्ध राष्ट्र के रूप में रूपान्तरित करना है, जो कि भारत की प्राचीन भारतीय संस्कृति और मूल्यों को भी प्रदर्शित करें (BJYM; 2016) ।' डेमोक्रेटिक यूथ फेडरेशन ऑफ इंडिया' (DYFI) 1980 में अस्तित्व में आया, यह कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी) का युवा संगठन है। DYFI एक ऐसा प्रगतिशील युवा संगठन है, जो साम्राज्यवाद विरोधी, जनवादी और समाजवादी विचारों से प्रेरित है। साथ ही देश के युवा समुदाय की बेहतरी और उत्थान के लिये निरन्तर प्रयत्नशील है (DYFI; 2016) ।

इनौस (1995) कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी–लेनिनवादी) लिबरेशन का, युवा संगठन है। इनौस सभी प्रकार की प्रतिक्रियावादी एवं औपनिवेशिक विचारधाराओं व मूल्यों के खिलाफ वैज्ञानिक जनवादी एवं आधुनिक मूल्यों का पक्षधर है। यह युवा आन्दोलन में उपस्थित उन फांसीवादी तथा दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों का विरोध करता है, जो युवाओं को क्षेत्र, जाति, भाषा, सम्प्रदाय के आधार पर बांटने की कोशिश करती है। इसी भाँति आप यूथ विंग (2014) आम आदमी पार्टी का, तथा युवा सेना (2010) शिव सेना का युवा संगठन है।

राजनैतिक दलों से संबंधित केवल युवा संगठन ही नहीं है अपितु छात्र संगठन भी है। जैसे–ऑल इंडिया स्टूडेन्ट्स फेडरेशन (1936) कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया का, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (1948) भाजपा का, स्टूडेन्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (1970) कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी) का, नेशनल स्टूडेन्ट्स यूनियन ऑफ इंडिया (1971) भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस का तथा ऑल इंडिया स्टूडेन्ट्स एसोसिऐशन (1990) कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवादी–लेनिनवादी) लिबरेशन का छात्र संगठन है।

3. **वर्तमान राजनीति में युवा एवं छात्र संगठनों की सहभागिता .** वर्तमान में युवाओं का झुकाव राजनीति की तरफ बढ़ रहा है। क्योंकि राजनैतिक दल युवाओं एवं छात्रों के लिये नई–नई लाभकारी योजनाओं एवं कार्यक्रमों का आयेाजन करके युवाओं को राजनीति की ओर उन्मुख कर रहे हैं, ताकि शासन व्यवस्था में उनका वोट बैंक एवं सत्ता बनी रहे। साथ ही आजकल युवा राजनीति में आकर राष्ट्र निर्माण के लिये निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता करना चाहते हैं। वह राजनीति को भविष्य में अपने लिए अवसर के रूप में देखते है। युवाओं की शासन व्यवस्था में सहभागिता की मंशा भी स्पष्टतः देखी जा सकती है।

एक अध्ययन में पाया गया कि बड़ी संख्या में युवा किस प्रकार वृहत स्तर पर प्रशासनिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिये कार्य करते हैं व ये संगठित एवं असंगठित दोनों प्रकार के युवा समूह थे। यह अध्ययन तमिलनाडु के 4 जिलों के 54 ग्राम पंचायतों द्वारा सामाजिक विकास के कार्यक्रमों के आयोजन से संबंधित था, जिसमें प्रत्येक ग्राम पंचायत विकास के सूक्ष्म स्तरीय योजनाओं का आयोजन करती है। इसी अध्ययन में पाया गया कि युवा ग्राम पंचायत की इन योजनाओं के क्रियान्वयन में सबसे आगे थे (Polanithurai, 2005)। इससे युवाओं की शासन व्यवस्था में सक्रिय सहभागिता को स्पष्टतः देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त आजकल विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भी छात्र नेता देखे जा सकते हैं। जो किसी न किसी प्रकार राजनीति से जुड़े हैं अथवा जुड़ना चाहते हैं। अतः युवाओं में राजनैतिक उन्मुखता बढ़ रही है। हालॉकि कुछ अध्ययन यह भी बताते है कि राजनैतिक दल युवा संगठनों का प्रयोग कॉलेजों व विश्वविद्यालयों में अषान्ति फैलाने में भी करते है (रॉस; 1969, विद्यार्थी, 1976)।

तालिका–1: शोध में चयनित राष्ट्रीय एवंराज्य स्तरीय राजनैतिक दल व युवा

राजनैतिक पार्टियां		युवा एवं छात्र संगठन
क. राष्ट्रीय स्तरीय	1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	इंडियन युथ कांग्रेस, नेशनल स्टूडेन्ट्स यूनियन ऑफ इंडिया।
	2. कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया	ऑल इंडिया स्टूडेन्ट्स फैडरेशन, ऑल इंडिया युथ फैडरेशन।
	3. कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (मार्क्सवाद)	भारत की जनवादी युवा परिषद, स्टूडेन्ट फैडरेशन ऑफ इंडिया।
	4. भारतीय जनता पार्टी	भारतीय जनता युवा परिषद, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद।
ख. राज्य स्तरीय	1. ऑल इंडिया फॉर्वर्ड ब्लाक	ऑल इंडिया युथ लीग
	2. शिव सेना	युवा सेना
	3. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवाद–लेनिनवाद) लिबरेशन	इनौस, ऑल इंडिया स्टूडेन्टस एसोसिऐशन
	4. आम आदमी पार्टी	छात्र युवा संघर्ष समिति, आम आदमी युथ विंग

इसी को दृष्टि में रखते हुये यह शोध पत्र युवा राजनैतिक संगठनों एवं राजनैतिक दलों के मध्य संबंधों की विवेचना करता है साथ ही युवा राजनैतिक संगठनों के मुद्दों को भी विश्लेषित करता है। युवाओं की राजनीति की ओर वर्तमान स्थिति को 2 बिन्दुओं के अन्तर्गत स्पष्ट किया जा सकता है।

A.राजनैतिक दलों एवं युवा, छात्र संगठनों के मध्य संबंध

B.युवा एवं छात्र राजनैतिक संगठनों के मुद्दें।

A. राजनैतिक दलों एवं युवा, छात्र संगठनों के मध्य संबंध . अवधारणात्मक रूप से राजनैतिक दल एक संगठन है, जो एक विचारधारा से संचालित होते है, तथा सत्ता में शक्ति पाने के उद्देश्य के साथ एक विशिष्ट हित के अन्तर्गत निर्मित होते हैं। यह निर्वाचकीय प्रक्रिया में सहभागिता, जनपदों के लिये प्रतिनिधियों का चुनाव व मतदाताओं को उन्मुख करते है एवं पूंजी में वृद्धि, राजनैतिक पदों को स्पष्ट करने, नीति निर्माण का संयोजन करना, अभियान रणनीति का विस्तार करना व पार्टी की पहचान व विश्वसनीयता के लिये पार्टी चिन्ह को उत्पन्न करते हैं। इन दलों की बुनियाद राजनैतिक, धार्मिक, अनुभागीय, नृजातीय, प्रजातीय और आर्थिक वर्ग हितो में निहित होती है। प्रायः दल समूहों का गठबंधन व पृथक हितों का समर्थन करते हैं (इंटरनेशनल एनसाइकलोपीडिया ऑफ दि सोशल साइन्सेस)। जबकि दूसरी तरफ युवा संगठन का अर्थ जन संगठन अथवा संस्था से है, जो विधिक रूप से रजिस्टर्ड होते हैं, यह संगठन युवा अन्वेषित या केन्द्रित गतिविधियों हितों व आवश्यकताओं से जुड़ा होता है, सामान्यतः प्रत्येक राजनैतिक दल का युवा एवं छात्र संगठन होता है।

राजनैतिक दल एवं युवा संगठन दोनों ही एक दूसरे से अपने–अपने हितों के लिये पारस्परिक घनिष्ठ से बंधे होते हैं। प्रकट रूप में वैचारिक स्तर पर युवा संगठन अपने राजनैतिक दल से संचालित होते हैं। परन्तु अप्रकट रूप से युवा अपनी गतिविधियों से राजनैतिक दल में अपना स्थान बनाना चाहते हैं। साथ ही समाज के सन्दर्भ में वे शक्तिशाली व्यक्तित्व के रूप में उभरना चाहते है। जबकि राजनैतिक दल युवाओं को अपने हितों की पूर्ति एवं अपना स्थान बनाये रखने हेतु दबाव समूह के रूप में प्रयोग करते हैं। शाह (2009) के अनुसार, स्वतन्त्रता के समय राजनैतिक दलों ने छात्रों को उन्मुख करने के लिये कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जबकि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद कॉंग्रेस में राजनैतिक अभिजनों ने छात्रों को वि राजनीतिकरण की सलाह दी, किन्तु अन्य सभी राजनैतिक दलों ने युवाओं के संगठनों का निर्माण किया। ये संगठन राजनैतिक दलों की राजनीति हेतु छात्रों, युवाओं को परियोजित करते है। अतः स्पष्ट है कि राजनीतिक दल के नेताओं द्वारायुवाओं का प्रयोग दबाव समूह की भाँति किया जा रहा है।अतः युवा संगठनों एवं राजनैतिक दलों के मध्य प्रकट रूप में सहयोगी परन्तु निहित रूप में द्वन्द्वात्मक एवं प्रतिस्पर्धात्मक संबंध पाये जाते है।

B. मुद्दे. युवा विश्वविद्यालय की स्वायत्ता, राष्ट्र भाषा, राजनीति में भ्रष्टाचार, निरंकुश एवं भ्रष्ट शासन प्रणाली, जनसामान्य के शोषण आदि जैसे बड़े राजनैतिक मुद्दों के लिये आन्दोलन करते हुए देखे जाते हैं। उदाहरणार्थ स्वतन्त्रता संग्राम में बड़ी संख्या में युवाओं ने, छात्रों ने भाग

लिया। तेलगांना आन्दोलन में युवाओं ने सक्रियता से सहभागिता निभाई (कस्टर्स, 1987)। पंश्चिम बंगाल में नक्सलवादी आन्दोलन में भी युवा बड़ी संख्या में आगे आये। बिहार में जे0पी0 आन्दोलन (बिहार आन्दोलन) जय प्रकाश नरायण के नेतृत्व में भ्रष्टाचार के विरुद्ध हुआ। जिसमें युवाओं ने कॉंग्रेस को प्रभावित करने में सफलता अर्जित की है (बारिक, 1977)। युवा संगठन शिक्षा की समस्याओं से लेकर राजनैतिक, आर्थिक, नैतिक एवं व्यवस्था के विरुद्ध अपना विरोध प्रकट करते रहते हैं। अधिकतर यह विरोध अर्न्तसंबंधित होते हैं। चयनित युवा संगठनों के अध्ययन में मुख्यतः पाया गया कि ये राजनैतिक युवा संगठन वृहत स्तर पर सारक्षरता अभियान, अस्पृश्यता, लिंग, जाति एवं प्रजाति भेदभाव का उन्मूलन, युवा एवं महिला सशक्तिकरण, नागरिक अधिकारों की सुरक्षा, किसानों एवं मजदूरों को संगठित करना, उच्च शिक्षा व्यवस्था में सुधार, रोजगार अवसरों में वृद्धि, राज्य व्यवस्था के विरोध व जनतान्त्रीकरण जैसे मुद्दों के प्रति प्रयासरत हैं। इसके अतिरिक्त युवा संगठन राजनैतिक मुद्दों को लेकर कई बार अपना विरोध प्रकट करते रहते है। वे सरकार की नीति व कार्यवाही से संबंधित राजनैतिक मुद्दों पर संगठित होते हैं।

4. निष्कर्ष एवं सुझाव . अध्ययन में सम्मिलित 4 राष्ट्रीय एवं 4 राज्य स्तरीय राजनैतिक दलों के छात्र एवं युवा संगठनों के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार से हैंः

a) प्रस्तुत शोध में राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर युवा, छात्र संगठनों का अध्ययन किया गया है, जिसमें पाया गया है कि, राष्ट्रीय स्तर के युवा एवं छात्र संगठन प्रांतीय स्तर के युवा, छात्र संगठनों की अपेक्षा अधिक सुदृढ़, एवं विकसित अवस्था में कार्यशील हैं।

b) युवा संगठनों एवं राजनैतिक दलों के मध्य प्रकट रूप में सहयोगी परन्तु निहित रूप में द्वन्द्वात्मक एवं प्रतिस्पर्धात्मक सम्बंध पाये जाते हैं।

c) शोध में राजनैतिक दलों के छात्र एवं युवा दोनों ही संगठनों का उल्लेख किया गया है, जिसमें छात्र संगठन परिसर, विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों तक सीमित रहकर संबंधित राजनीतिक दल की विचारधारा एवं नीतियों से संचालित होकर परिसर के छात्रों के अधिकारों व हितों के लिये कार्य करते हैं। साथ ही छात्रों तक संबंधित दल की विचारधारा एवं नीतियों का प्रचार भी करते हैं। जबकि युवा संगठन केवल परिसर तक सीमित न रहकर वृहत् स्तर पर संबंधित राजनैतिक दल की विचारधारा से देश के युवाओं एवं अन्य लोगों को अवगत कराते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि कार्य क्षेत्र की दृष्टि से छात्र संगठनों की अपेक्षा युवा संगठनों का कार्य क्षेत्र व्यापक है।

d) लगभग प्रत्येक छात्र एवं युवा संगठनों के उद्देश्य, विचारधारायें, अपनी मदर पार्टी के अनुरूप हैं। मुख्यतः जिस राजनैतिक दल से युवा एवं छात्र संगठन जुड़े हैं, उन्हीं के विचारों, जाति, मतों, वर्गों इत्यादि को सहयोग करते हैं।

e) प्रस्तुत शोध में चयनित युवा एवं छात्र संगठन अधिकतर लेफ्ट विंग राजनैतिक दलों से संबंधित हैं और समाजवाद, समानता, स्वतन्त्रता एवं प्रजातन्त्र की स्थापना पर बल देते हैं।

f) राष्ट्रीय एवं प्रांतीय दोनों स्तर के युवा एवं छात्र संगठनों में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों की अपेक्षा कम है। संगठनों के चयनित अध्यक्ष एवं अन्य महत्वपूर्ण पदों पर युवा पुरूष

विद्यमान हैं।

g) चयनित युवा संगठनों के युवाओं की आयु 14–40 वर्ष के बीच है।

h) राजनैतिक युवा संगठन वृहत् स्तर पर साक्षरता अभियान, अस्पृश्यता, लिंग, जाति एवं प्रजाति भेदभाव का उन्मूलन, युवा एवं महिला सशक्तिकरण, नागरिक अधिकारों की सुरक्षा, किसानों एवं मजदूरों को संगठित करना, उच्च शिक्षा व्यवस्था में सुधार, रोजगार अवसरों में वृद्धि, राज्य व्यवस्था के विरोध व प्रजातन्त्रीकरण जैसे मुद्दों के प्रति प्रयासरत् है।

युवाओं को राजनैतिक दलों की विचारधारा से हटकर अपनी स्वतन्त्र विचारधारा से जुड़ने की आवश्यकता है, तभी युवाओं की राजनीति में वास्तविक सहभागिता होगी, अन्यथा युवा मात्र राजनैतिक दलों के अधीन ही रह जायेंगे। साथ ही महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिये पर्याप्त वातावरण व अवसर उपलब्ध कराने चाहिये अन्यथा राजनीति में भी पुरुष प्रधानता बढ़ेगी तथा पितृसत्तात्मक विचारधारा कायम रहेगी, जो एकपक्षीय होने के साथ प्रजातन्त्र के लिये उचित नहीं है।

सन्दर्भ

1 Barik, Radhakanta.1977. *Politics of the JP Movements.* Delhi: Radiant Publishers.

2 Chandra, Bipan.1988. *Indian National Movement: The Long Term Dynamics*. New Delhi.

3 Custers, Peter. 1987. *Women in the Tebhaga Uprising.* Calcutta: NayaProkash.

4 Desai, A.R. 1948. *Social Background of Indian Nationalism* .Popular Prakashan.

5 McDonald, W.Wesley. "Political Parties" in William A. Darity Jr.(ed) *International Encyclopedia of The Social Sciences,* Vol.6 ,2nd ed, pp.**306.**

6 Pandey, Rajendra. 1994. "Student Activism in British India", *Social Problems of Contemporary India,* New Delhi: Ashish Publishing House, pp. **171-182**

7 Polanithurai, G. 2005. "Role of Youth in Governance at Grassroots", *Endeavour: Journal of Youth Development*, 1 (1).

8 Ross, Aileen D. 1969. *Student Unrest In India*. London: McGill- Queen's University Press.

9 Sampat, kinjal and jyoti Mishra 2014. "Interest in politics and political participation" in sanjay kumar (ed). *Indian youth and electoral politics: An emerging engagement.* New Delhi: Sage Publications.

10 Saraswathi, S. 1988. *Youth in India*. New Delhi: Indian Council of Social Science Research.

11 Shah, Ghanshyam. 2009. *Social Movements In India*. New Delhi: Rawat Publications.

12 Vidyarthi, L.P. 1976. *Students Unrest in Chhotanagpur,* 1960-1970. Calcutta: PunthiPustak.

13 Weiner, Myron. 1963. *The Politics of Scarcity*. Bombay: Asia Publishing House.

14 All India youth league official website. (7/05/2016). Retrieved from http:// www.aiyl.forwardbloc.org/

15 All Indiayouth federationofficial website. (28/04/2016). Retrieved from

16 http://aiyfnationalcouncil.blogspot.in/

17 Indian youth congress official website. (08/04/2016). Retrieved from: http://iyc.in/

18 Bhartiya janta yuva moarcha official website. (14/03/2016). Retrieved from: http://www.bjym.org/

19 Bhartiya janta party official website. (11/03/2016). Retrieved from: http://www.bjp .org/

20 Communist party of India official website. (21/04/2016). Retrieved from: http://www.communistparty.in/